२ थिस्सलुनीकियों
(2 Thessalonians)

२ थिस्सलुनीकियों (2 Thessalonians)

१ **पौलुस** और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम, जो हमारे पिता परमेश्वर और
२ प्रभु यीशु मसीह में है । **हमारे** पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे ।
३ **हे भाइयो**, तुम्हारे विषय में हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए और यह उचित भी है, इसलिये कि तुम्हारा
४ विश्वास बहुत बढ़ता जाता है, और तुम सब का प्रेम आपस में बहुत ही होता जाता है । **यहां** तक कि हम आप परमेश्वर
की कलीसिया में तुम्हारे विषय में आनन्दित होते हैं, कि जितने उपद्रव और क्लेश तुम सहते हो, उन सब में तुम्हारा धीरज
५ और विश्वास प्रगट होता है । **यह** परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट प्रमाण है; कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरो,
६ जिस के लिये तुम दुःख भी उठाते हो । **क्योंकि** परमेश्वर के निकट यह न्याय है, कि जो तुम्हें दुःख देते हैं, उन्हें बदले में
७ दुःख दे । **और** तुम्हें जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ,
८ धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होंगे । जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते

अध्याय १

१:१ १ थिस्स १:१ ***"सिलवानुस"*** - सीलास भी वही व्यक्ति है ।

१:२ रोमि १:७

१:३ रोमि १:८ आदि ***"तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जाता है", "प्रेम...बहुत ही होता जाता है"*** - १ थिस्स ३:१०,१२; ४:१० । उनके लिए पौलुस की आशा पूरी हो रही थी, उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर भी मिल रहा था ।

१:४ ***"घमण्ड"*** २ कुरि ७:१४ । यह चापलूसी नहीं थी - १ थिस्स २:५ । उस कलीसिया की स्थिति में भी आनन्दित था । ***"उपद्रव और क्लेश"*** - १ थिस्सु १:६; २:१४; ३:३;

१:५ ***"प्रमाण"*** हमारे परखे जाने और सताए जाने को धीरज से सहते जाना, हमारे मसीह में विश्वास का यह प्रमाण है, । कि हमारा विश्वास सच्चा और जीवित है । यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का प्रमाण भी है । इसका अर्थ बिल्कुल स्पष्ट नहीं है । शायद इसका अर्थ है कि उन्हें चुना जाने का निणर्य और उनमें कार्य करना उनके विश्वास में बने रहेने से सिध्द होता है । फिलि १:२७,२८ से तुलना करें ।

"योग्य ठहरो" लूका २०:३५; पत ३:१४ से तुलना करें । उध्दार पाने या परमेश्वर के राज्य में प्रवेश के लिए कोई भी योग्य नहीं है - रोमि ३:६ १६, २३, कुल १:१३,१४ विश्वासी अपने चरित्र और विश्वास में बने रहने के व्दारा पुष्टि करते है; कि परमेश्वर ने उन्हें बदला है । उन्हें अपने राज्य के लिए इस प्रकार से जीवित रहने के योग्य बनाया है जो उसके राज्य के लिए उचित है ।

"परमेश्वर का राज्य" - मत्ती ४:१७ के नोट्स देखें ।

"दुःख" रोमि ८:१७; मत्ती ५:१० । यह उनके योग्य होने का प्रमाण था । जो उसके राज्य के लिए, दुःख उठाने का इन्कार करते हैं, वे उसके राज्य के योग्य नहीं है ।

१:६ ***"परमेश्वर.....दुख दे"*** - यह बाइबिल का एक सत्य है (व्यव ३२:४; भजन ९:१६; ११:७;८९:१४;१११:७; नीति २६:२६; यशा ३०:१८; दा. ४:३७, रोमि ३:२६, प्रका १५:३; १६:५-७) । जो मन परिवर्तन के लिए तैयार नहीं होता, उसे दण्ड देने के द्वारा और जो उसके राज्य के लिए दुःख उठाने के लिए तैयार है, उसे अनन्त विश्राम देने का द्वारा अपना न्याय प्रगट करते हैं पद ७; रोमि
२:६-११ से तुलना करें बदले में गिनती ३१:१-३, व्य. ३२:३५, ४१; रो. १२:१९ इब्रा १०:३०;

१:७ ***"प्रभु यीशु ......प्रगट होगा"*** परमेश्वर कभी कभी लोगों से बदला लेते हैं और यहाँ रह विश्वासियों को बचा लेते हैं । अधिकांश बातों के सम्बन्ध में लोगों का न्याय तभी होगा, जब प्रभु यीशु उस युग के अन्त में आएगें । तभी सभी बातें ठीक कर दी जाएगीं, न्याय स्थापित किया जाएगा । लोग देखेंगे कि न्याय प्रबल है ।

"प्रकट होगा" तब परमेश्वर के लोगों को आराम मिलेगा । उसके पहले ऐसा नहीं होगा । मत्ती २४:२९,३०; १ कुरि १:७, तीतुस २:१३ से तुलना करें ।

"स्वर्गदूत" मत्ती २४:३१; यहूदा १४

१:८ ***"आग"*** इब्रा. १०:२७; १२:२९; २ पत ३:७; प्रका १९:११-१६; यशा ६६:१५; ३०:२७; २४:६

"पलटा लेना" परमेश्वर किसी को दण्ड नहीं देना चाहते । यहे १८:२३,३०-३२; योएल २:१३; २ पत ३:१ । जब लोग पश्चात्ताप से इन्कार करते और पाप में लगे रहते है । न्यायी होने के कारण वह दण्ड देते है । निर्ग ३४:६,७ नहूम १:३ । यदि परमेश्वर अपराधी को दण्ड नहीं देते है, तो वह न्यायी नहीं है और एक क्रम न होने के कारण संसार अस्त व्यस्त होगा ।

"जो परमेश्वर को नहीं पहचानते" - लोग सच्चे परमेश्वर को इसलिए नहीं जानते क्योंकि वे ऐसा चाहते ही नहीं । किसी भी ऐसे अवसर को वे ठुकराते हैं । परमेश्वर के साथ संगति के बजाए वे पाप को प्राथमिकता देते है । यूहन्ना ३:१९,२०; रोमि १:१८-२५; इफि ४:१७-१९ ।

"सुसमाचार को नहीं मानते" यह उन लोगों की ओर संकेत है, जिन्होंने सुनने के पश्चात इन्कार कर दिया है । मसीह के प्रति आज्ञाकरिता के बजाए, जिसे वे स्वतंत्रता कहते हैं, उसे चाहते है । यहाँ ध्यान दे मसीह के शुभसंदेश की आज्ञा मानी जानी चाहिए, मात्र विश्वास काफी नहीं है । मत्ती ७:२१,२४; प्रेरित ५:३२; रोमि ६:१७; इब्रा ५:९; १ पत. १:२२; ४:१७ । देखा जाए तो सुसमाचार पर विश्वाास करने का परिणाम इसके प्रति आज्ञाकारिता है । विश्वास करना और आज्ञा मानना एक दूसरे से जुड़े हुए हैं जिन्हें अलग नहीं किया जा सकता । याकूब २:१४-२६ से तुलना करें । बिना कार्य का विश्वास नहीं होता है । प्रेरित २२:१०; इब्रा ११:४ आदि ।

९ उन से पलटा लेंगे । **वे प्रभु** के साम्हने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे ।
१० **यह** उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को
११ आएंगे; क्योंकि तुम ने हमारी गवाही पर विश्वास किया । **इसलिये** हम सदा तुम्हारे लिए प्रार्थना भी करते हैं, कि हमारे,
परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझें, और भलाई की हर एक इच्छा, और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ सहित
१२ पूरा करें, **कि हमारे** परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का नाम तुम में महिमा पाए, और तुम उस में ।
२ हे भाइयो, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय में तुम से बिनती करते हैं ।
२ **कि किसी** आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि प्रभु का दिन आ पहुंचा
३ है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए; और न तुम घबराओ । **किसी तरह** से किसी के धोखे में न आना क्योंकि

१:९ ***"अनन्त विनाश"*** २:३; मत्ती ७:१३ रोमि ९:२२; गल ६:८; फिलि ३:१९; १ थिस्सु ५:३; १ तिमो ६:९; २ पत ३:७,१२,१६; प्रका १७:८, ११ विनाश का अर्थ है पूर्ण नाश (प्रका २१:८) । बाईबल यह नही कहती है कि ऐसे लोगों का जीवन समाप्त हो जाता है । मत्ती २५:४६; लूका १६:२६ से तुलना करें ***"प्रभु के साम्हने से"*** मत्ती ७:२३; २५:४१; प्रका २२:१५,१६ से तुलना करें । उनके सर्वनाश का यही अर्थ है । वे उस परमेश्वर से अलग किए जाएंगे, जो आशीष आनन्द और शान्ति का स्त्रोत है । अपने जीवनकाल में उन्होंने इसी का चुनाव किया था (पद ८) यही उन्हें मिलेगा भी । यह न्याय भी है कि उन्हें दण्ड मिले ।

"उसकी महिमा के सामर्थ से" यशा २:१०-११,१९,२१ ।

१:१० ***"महिमा"*** यूहन्ना १७:१०; इफि १:१२,१४ ।

"सन्त" - मसीह में सभी सच्चे विश्वासी, रोमि १:७; १ पत २:९)

"प्रशंसा (महिमा)" जब अन्त में हम उसे वैसा हो देखेगे जैसा वह है, तो हम कैसे आनन्द से ओतप्रोत हो जाएंगे ।

"पवित्र लोगों में जो उस पर विश्वास करते है उनमें मसीह महिमा पाता है । वे ही महिमा प्राप्त करेंगे । अन्य दूसरे अपने अविश्वास और व्यवहार से निरन्तर उनका अनादर करेंगे ।

"तुमने हमारी गवाही की प्रतीति की" - १ थिस्सु १:७-१० ।

"उस दिन" - १ थिस्स ५:२, यशा २:१२ से तुलना करे ।

१:११ ***"सदा तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हैं"*** रोमि १:८,९; इफि १:१६; ३:१६; फिलि १:४,९; कुलु १:३,९,२१; १ थिस्स १:२; ३:१०

"योग्य" पद ५; इफि. ४:१; रोमि १:६, ८:३० देखें ।

"हर एक कार्य को सामर्थ सहित पूरा करे" भजन ९०:१७; यशा २६:१२ से तुलना करें । इसलिए कि वह हममे कार्य करते हैं । हम विश्वास के किसी भी कार्य को पूरा करने के योग्य हैं । फिलि २:१३, इफि २:१ ।

१:१२ ***"नाम"*** संसार के साम्हने मसीही उसके नाम को रखते हैं (१ पत ५:१६)

"तुममें महिमा पाए" जब मसीह आएंगे, तब ऐसा होगा । (पद १०);

ऐसा अभी भी होना चाहिए - १ कुरि ६:२०; १०:३१; कुल ३:१७; १ पत ४:११ ।

"तुम उस में" जिन में यीशु मसीह को महिमा (आदर, प्रशंसा) मिली है, उनमें वह महिमा पाएंगे । यूहन्ना १७:१०,२२; रोमि ८:३०

"अनुग्रह" विश्वासियों के उध्दार और उनकी आशीषों से जुड़ी हुयी प्रत्येक बात परमेश्वर की दया पर निर्भर है (रोमि ६:२३; इफि २:८,९) । इस पद के आखिरी भाग को इस तरह भी कहा जा सकता है ***"हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह"***

अध्याय २

२:१ ***"अपने प्रभु यीशु के आने"*** १:७ प्रेरित १:११ ।

"उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय में" - १ थिस्स ४:१७ यूहन्ना १४:३; मत्ती २४:३१ से तुलना करे । प्रायः इसे ***"रैप्चर"*** कहा जाता है (उठा ले जाना) ।

२:२ ***"पत्र के व्दारा जो मानो हमारी ओर से हो"*** हमे यह नहीं मालूम कि इन विश्वासियों को कौन परेशान कर रहा था । शायद यहाँ वह झूठे शिक्षकों की ओर इशारा करता है, जो शायद (वह सोचता था) कि उसके पत्र की नकल करने में हिचकिचाए न होते और यह कहा होता, कि यह पौलुस ने लिखा है । या कुछ और तरीके उसे दुखी किया होता । दूसरे पत्रों में उनके बारे में पौलुस ऐसे शिक्षकों का चरित्र दिखाता है - रोमि १६:१७,१८; २ कुरि ११:१३-१५ आदि । हम यह आशा न रखें कि सत्य के शत्रु जब इससे संघर्ष करते हैं, तो नैतिक कैसे हो सकते हैं ।

"प्रभु का दिन" - फिलि. १:१०; २:१६ इसका अर्थ है मसीह का व्दितीय आगमन । १ थिस्स. १:८ में इसे "मसीह यीशु का दिन" कहा गया है । १ थिस्स ५:२ के ***"प्रभु के दिन"*** के आरम्भ में वह आएंगे । कुछ लोग कहते है कि उठाए जाने के कुछ वर्ष पहले वह आएंगे, किन्तु स्वयं पौलुस ने ऐसा कभी नहीं कहा ।१ थि. ४:१६-१७ पौलुस यह नहीं चाहता था कि थिस्सुलीने के विश्वासी यह सोचें कि मसीह का दिन आ चुका है -यह कि मसीह के आने के सम्बन्ध की शिक्षा के बारे में पौलुस नासमझ था । उनके अनुसार यदि वह इस विषय में गलत था, तो वे कह सकते थे कि सुसमाचार एवं अन्य विषयों पर भी वह गलत शिक्षा दे रहा था । इसके परिणाम बहुत दुखदपूर्ण हो सकते थे ।

२:३ ***"कोई तुम्हें धोखा न दे"***- ऐसा धोखा देने वाले सदैव होंगे, जो विश्वासियों को एक सत्य से हटाकर दूसरे सत्य की ओर ले जाएंगे । मत्ती २४:४ रोमि १६:१८; इफि २:६; कुल २:४ से तुलना करें। आवश्यकता इस बात की है कि हम जाने, परमेश्वर का वचन क्या कहता है और सतर्क रहें।

"जब तक" पौलुस एक ऐसी घटना की चर्चा कर रहा है, जो मसीह के दिन (प्रभु के दिन) के पहले आएगी । वह यह नहीं कहता है कि यह ***"उठाए जाने वाली"*** ही घटना है । यदि उसने विश्वास किया होता, कि यह प्रभु के दिन के प्रारम्भ में आएगा, तो यह कहने

वह दिन न आएगा, जब तक विश्वास का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो ।
४ **जो** विरोध करता है, और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहां तक कि वह
५ परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को परमेश्वर प्रगट करता है । **क्या** तुम्हें स्मरण नहीं, कि जब मैं तुम्हारे यहां था,
६ तो तुम से ये बातें कहा करता था ? **और** अब तुम उस वस्तु को जानते हो, जो उसे रोक रही है, कि वह अपने ही समय
७ में प्रगट हो । **क्योंकि** कानून-हीनता का रहस्य अभी भी जारी है ।, पर अभी एक रोकनेवाला है, और जब तक वह दूर

का एक आदर्श समय हुआ होता । किन्तु वह ऐसा नहीं करता है ।इसके विपरीत वह ***“विश्वास त्याग”*** की बात करता है । यहाँ यूनानी भाषा में ***“विद्रोह”*** या ***“त्यागना”*** या ***“विश्वास त्याग”*** है । सामान्यतया इसका अर्थ अपने मत या विश्वास या उसके सिध्दान्तों से दूर हो जाना है । प्रथम मनुष्य की आनाज्ञाकरिता (उत्पत्ति अध्याय ३) आरम्भ से परमेश्वर के - विरोध में बलवा करता और उससे दूर जाता रहा है । इस विषय में परमेश्वर के अपने लोग, इस्राएली, समस्त लोगों के प्रतिनिधि हैं । व्यव ९:७,२४; भजन १०६४३; यशा १:२; यिर्म ६:२८ । हर प्रकार का पाप विद्रोह का चिन्ह है (१ यूहन्ना ३:४) देखे) । पौलुस ने अन्तिम विद्रोह या सत्य से दूर जाने के विषय में लिखा है, जो इस युग के अन्त में होने वाला है । इसका प्रभाव पृथ्वी के सभी धर्मों और लोगों (मसीह की शिक्षाओं को त्यागने वाले मसीही) पर होगा । - पद ४; मत्ती २४:१०-२५; २ तिमो ३:१-५; प्रका १३:४, ८, १३-१५;

“पाप का पुत्र” यह विद्रोह एक ऐसे व्यक्ति के व्दारा चलाया जाएगा जो इतना पापमय होगा कि विद्रोह और बुराई का मानो साक्षात रूप हो । आने वाला ख्रीष्ट विरोधी यही है - १ यूहन्ना २:१८ ।

“विनाश का पुत्र”- यूहन्ना १०:७ से तुलना करें । इसका अर्थ है, वह व्यक्ति जो विनाश से बंधा हुआ है और जिसका नाश निश्चित है ।

२:४ ***“पाप का पुत्र”*** यह एक असाधारण राजनैतिक और मिलिट्री नेता होगा । वह ईश्वर होने का दावा करेगा और पृथ्वी के प्रत्येक व्यक्ति से उपासना चाहेगा - प्रका १३:१-८, १५ । उसके हृदय में न परमेश्वर और, न मनुष्य के बनाए नियमों के लिए किसी प्रकार का सम्मान होगा । स्वभाव और चरित्र में वह यीशु मसीह के बिल्कुल विपरीत होगा । इब्रा. १०:७, भजन ४०:८) संसार मसीह को नहीं चाहता । इसलिए वे मसीह विरोधी की ओर ही लग जाएंगे । वे परमेश्वर के कानून कायदो को नहीं चाहेंगे, इसलिए वे अधर्मी का हो पाएंगे ।

“बड़ा ठहराता है” दानिय्येल ७:८, ११,२०,२५; प्रका १३:५,६

“परमेश्वर के मन्दिर” सच्चे परमेश्वर की उपासना के लिए समर्पित इमारत । मत्ती २४:१५; मरकुस १३:१४ से तुलना करे ।

“अपने आप को परमेश्वर प्रगट करता है” यह अन्तिम पाप है । बाईबिल के अनुसार किसी व्यक्ति का दावा करना कि वह परमेश्वर है, परमेश्वर की निन्दा है । यूहन्ना ५:१८; १०:३१-३३; मत्ती २६:६४,६५ । विद्रोह और दुष्टता का साक्षात दिखना - यह दुष्टता की चरम सीमा है । परमेश्वर सामर्थी सृष्टिकर्ता हैं । परमेश्वर ने सब को बनाया है । वह पूर्ण पवित्र है । सब लोग पापी हैं । उत्पत्ति ८:२१; लैव्य २०:७; यशा ६:३; रोमि ३:९-२३; १ पत १:१५,१६ ।

२:५ ***“जब मैं तुम्हारे यहाँ था”*** - पौलुस उनके साथ थोडे समय के लिए था । प्रेरित १७:१-१० । वह सोचता था कि उन्हें दी गयी शिक्षा में यीशु का व्दितीय आगमन एक प्रमुख विषय था ।

२:६,७ जब तक परमेश्वर का समय पूरा न हो, कोई व्यक्ति या सामर्थ ख्रीष्ट विरोधी के प्रगट होने को रोके रहेगी । पौलुस ने यह सिखाया था कि यह सामर्थ या व्यक्ति कौन है । इस पत्र में उसने अपने शब्दों को नहीं दोहराया । इसलिए उसका अर्थ क्या था हमें नहीं मालूम । इसलिए हम अर्थ के बारे में अड़े नहीं रह सकते । इस विषय पर लोग अनुमान लगाते रहे है ।

कुछ विश्वासियों का कहना है कि पौलुस का अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा, ख्रीस्ट विरोधी के प्रगट होने को रोके रहता है । उनके अनुसार ***“जब तक वह दूर न हो जाए”*** का अर्थ है कलीसिया का उठाया जाना । उसके बाद पवित्र आत्मा जो सभी विश्वासियों में है उनके साथ इस पृथ्वी से उठा लिया जाएगा । यह भी एक कल्पना मात्र है । यहाँ पवित्र आत्मा, कलीसिया या कलीसिया उठाए जाने के विषय में नहीं है । यदि पौलुस का अर्थ यहाँ पवित्र आत्मा से था, तो ***“जब तक वह दूर न हो जाए”*** अवश्य नहीं कि कलीसिया के उठाए जाने के सम्बन्ध है । महाक्लेश या कलीसिया के उठाए जाने से पहले पवित्र आत्मा के उठाए जाने वाली शिक्षा के साथ एक समस्या यह है कि पूरे महाक्लेश के काल में भी कुछ प्रकार के विश्वासी या सन्त रहेंगे (प्रका ७:९-१७, १३:६ आदि) । यह कैसे संभव है कि पृथ्वी पर जब उन्हें पवित्र आत्मा की आवश्यकता बहुत अधिक होगी, वे उसके बिना इस पृथ्वी पर छोड़ दिए जाएंगे ?

“जब तक वह दूर न हो जाए” का अर्थ भी स्पष्ट नहीं है । यह यूनानी शब्द का यथार्थ अर्थ नहीं है । सच पूछे तो इसका अर्थ होगा; ***“जब तक वह हमारे बीच से उठा नही लिया जाता ।”*** इसका अर्थ रास्ते से हट जाना हो सकता है । निश्चित रीति से यहाँ यह उठाए जाने की ओर संकेत नहीं है । बीच में से उसके उठाए जाने में ऐसा कोई संकेत नहीं है, कि कुछ और या कोई और उसके साथ है । हमें यह भी नहीं बताया गया है कि वह ***“किसके बीच”*** से चला जाता है । ऐसे सन्देहास्पद वाक्यांश को लेना और ज़ोर डालकर कहना कि यह कलीसिया के उठाए जाने के सम्बन्ध में है, सही नहीं है ।

कुछ दूसरे लोग कहते हैं कि पद ६ में वह किसी स्वर्गदूत की ओर इशारा कर रहा है । इस युग के अन्त में निश्चित रीति से स्वर्गदूत काफी क्रियाशील होंगे - प्रका ७:१,९:१४,१५; आदि (शब्द ***“स्वर्गदूत”*** एक वचन या बहुवचन - प्रकाशितवाकय में ८० बार आता है) । यह संभव है कि परमेश्वर ने सही समय आने तक के लिए, ख्रीस्ट विरोधी के प्रगट होने पर रोक लगा रखी है । यह विचार दूसरे विचार के समान ही लगता है । यहाँ यह बात बार-बार कहे जाने की आवश्यकता है । पौलुस ने यह नही बताया कि उसका अर्थ क्या है, इसलिए हमें भी यह नहीं मालूम ।

“आचारसंहिता के विरोध का रहस्य” इस के विषय में मत्ती १३:११; रोमि ११:२५; १६:२५; १ कुरि १५:५१ आदि में देखें । यदि परमेश्वर हम पर प्रगट न करते तो अधर्म और दुष्टता के अन्तिम विकास के बारे में हम कुछ भी नहीं जान सकते थे । पौलुस के समय

८ न हो जाए, वह रोके रहेगा । **तब** वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की फूंक से मार डालेंगे, और अपने
९ आगमन के तेज से भस्म करेंगे । **उस** अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ, और चिन्ह,
१० और अद्‌भुत काम के साथ, **और** नाश होनेवालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्हों ने सत्य
११ के प्रेम को अपनाया नहीं जिस से उन का उध्दार होता । **और** इसी कारण परमेश्वर उन में एक भटका देनेवाली सामर्थ को
१२ भेजेगा ताकि वे झूठ की प्रतीति करें, **और** जितने लोग सत्य पर भरोसा नहीं करते, वरन् अधर्म से प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड
१३ पाएं । **पर** हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगो, चाहिये कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, कि
१४ परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया; कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उध्दार पाओ । **जिस**
१५ के लिये उस ने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो । **इसलिये**,
हे भाइयो, स्थिर रहो; और जो जो बातें तुम ने क्या वचन, क्या पत्र के द्वारा हम से सीखी हैं, उन्हें थामें रहो ।

में दुष्टता कार्यरत थी । जब तक पाप का पुरूष प्रगट नहीं होता, यह कार्य कर रही है और करती रहेगी । अधर्म पूरी रीति से विकसित हो चुकेगा । विधान को पूरी रीति से तज दिया जागए । सारी पृथ्वी पर एक दुष्ट व्यक्ति ही राज्य करेगा ।

२:८ हालाँकि यह अधर्मी व्यक्ति सामर्थी होगा, किन्तु वह मसीह के सामने खड़ा नहीं रह सकेगा । देखें प्रका १९:१९,२० ***"मुँह की फूँक से"*** यश.-११:४ यूनानी में इस शब्द फूँक (श्वांस) का अर्थ आत्मा भी होता है । यह उसके सामर्थी शब्द की ओर संकेत कर सकता है (इब्रा १:३, ४:१२ से तुलना करें) । मसीह को बोलना ही है और उसके उद्देश्य पूरे होकर रहेंगे (तुलना करें) उत्पत्ति १:३ आदि; यशा ५५:११)

"आगमन के तेज" - मत्ती २४:३०; २५:३१; तीतुस २:१३; प्रका १९:११,१२ ।

२:९; प्रभु यीशु मसीह का आना परमेश्वर के कार्य के अनुरूप था । मसीह विरोधी का आना भी शैतान के कार्यक्रम का एक भाग होगा । (प्रका १३:२) । हम इस संसार की सही स्थिति को इस सत्य से समझ सकते हैं कि मानव जाति के लिए ख्रीष्ट विरोधी अधिक मशहूर होगा - प्रका. १३:३,४,८ । यूहन्ना १:१०,११; ५:४३ से तुलना करें ।

"सामर्थ..अद्‌भुत" मत्ती २४:२४ देखे; और प्रका. १३:१३,१५ देखें । शायद ये आश्चर्य कर्म मसीह व्दारा किए गए आश्चर्यकर्म के समान होंगे (प्रेरित २:२२ देखें जहाँ वही शब्द उपयोग हुए हैं ।) किन्तु आश्चर्यकर्म ***"झूठे"*** होंगे । यूनानी शब्द का अर्थ ***"अवास्तविक"*** या ***"झूठा"*** हो सकता है, किन्तु शायद यहाँ इसका अर्थ है , ***"धोखा देनेवाला"*** । दूसरे शब्दों में वे सचमुच के आश्चर्यकर्म होंगे जिनको देखकर लोग झूठ पर विश्वास करेंगे ।

२:१० ***"अधर्म के सब प्रकार के धोखे"*** - दुष्टता लोगों को धोखा देती है (इब्रा. ३:१३ से तुलना करें) यह संसार की तीन दुष्ट शक्तियों में से एक है (दो अन्य के लिए यिर्म १७:९ और प्रका. १२:८ देखें) । इस युग के अन्त तक तीनों भयंकर रीति से विकसित हो जाएंगे ।

"नाश होने वाले" - १ कुरि १:१८; २ कुरि २:१५, ४:३; यूहन्ना ३:१६ । नाश होने वाले वे लोग हैं जो परमेश्वर के सत्य के नहीं किन्तु पाप के प्रेमी हैं । वे सत्य को नहीं चाहते और जानबूझकर तिरस्कार करते हैं । क्योंकि वे, वह सब करना चाहते हैं, जो उनके पापमय स्वभाव को पसन्द है । यूहन्ना ३:१९,२०; रोमि १:१८ । यहाँ सत्य के प्रति प्रेम और उध्दार के बीच पौलुस जो सम्बन्ध दिखलाता है, उस को ध्यान से देखें । हम एक के बिना दूसरे को प्राप्त नहीं कर सकते ।

२:११ ***"झूठ"*** ख्रीष्ट विरोधी का यह दावा करना कि वह स्वयं परमेश्वर है (पद ४) । परमेश्वर यह चाहेगे कि वे इतना धोखे में रहे कि झूठ पर विश्वास करें (रोमि १:२८; ११:८, यशा २९:१०; ६:१०, १ राजा २२:१९-२३ । यह दण्ड उनके सत्य के तिरस्कार करने के कारण होगा । यह बिल्कुल सही परिमाण का दण्ड भी होगा । पापी लोग जिसके लायक हैं, वही दण्ड उन्हें मिलेगा । भजन १८:२५,२६, और टिप्पणी देखें । सबसे भयानक बात जो मनुष्य कर सकता है वह है, सत्य का इन्कार । इसका परिणाम मात्र झूठ की प्रतीति करना ही नहीं होगा, किन्तु अनन्तकालित दण्ड ।

"अधार्मिकता" मत्ती २३:३३, मरकुस १६:१६; यूहन्ना ३:१८; ५:२८; गल १:८ ।

"अधार्मिकता" दुष्टता में आनन्दित होना और सत्य पर विश्वास करना एक दूसरे के विपरीत हैं । यदि हम एक करते हैं, दूसरा नहीं कर सकते ।

२:१३ ***"प्रभु के प्रिय लोगो"*** - कुलु ३:१२; १ थिस्सु १:४; १ यूहन्ना ३:१ ।

"परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया " - इफि १:४

"आत्मा के व्दारा पवित्र बनकर' - १ पत १:२ । इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर उन लोगों को अलग करता है जिनको उसने चुन लिया है । जिनको पवित्र बनाने के लिए उसने उनमें अपना कार्य आरम्भ कर दिया है । यह कुछ लोगों के विषय में सत्य नहीं है किन्तु प्रत्येक के बारे में "सत्य की प्रतीति करके " लोगों को उध्दार देने के लिए परमेश्वर इसी तरीके का उपयोग करते हैं । सत्य के ऊपर डाले गए ज़ोर पर ध्यान दें । जैसा कि वह अगले पद में कहता है पौलुस यहाँ मसीह के शुभसंदेश की ओर इशारा करता है ।

२:१४ ***"बुलाया"*** रोमि १:६; ८:२८,३० ।

"हमारा सुसमाचार" जिसका एलान उन लोगों ने किया और जिसकी ज़िम्मेदारी मसीह ने उन पर सौंपी थी (गल १:११,१२; १ कुरि १५:१-८) ।

"महिमा को प्राप्त करो" १ थिस्सु २:१२; रोमि ५:२; ८:१७; यूहन्ना २७:२२; सत्य पर विश्वास करनेवालों और न करनेवालों में यह अन्तर होगा - एक झुण्ड अनन्त महिमा प्राप्त करता है । दूसरा झुण्ड अनन्त दण्ड (पद १२) रोमि ६:२२२-२४ से तुलना करें ।

२:१५ ***"इसलिए"*** उनके व्दारा दिए गए सत्य के प्रकाश में, वह उन्हें और हमें भी सत्य को पकड़े रहने के लिए कहता है । रोमि १२:१;

१६ **हमारे** प्रभु यीशु मसीह आप ही, और हमारे पिता परमेश्वर जिन्हों ने हम से प्रेम रखा, और अनुग्रह से अनन्त शान्ति और उत्तम
१७ आशा दी है, तुम्हारे मनों में शान्ति दें, और तुम्हें हर एक अच्छे काम, और वचन में दृढ़ करें ।
३ निदान, हे भाइयो, हमारे लिये प्रार्थना किया करो, कि प्रभु का वचन ऐसा शीघ्र फैले, और महिमा पाए, जैसा तुम में हुआ,
२,३ **और** हम टेढ़े और दुष्ट मनुष्यों से बचे रहें क्योंकि हर एक में विश्वास नहीं । **परन्तु** प्रभु सच्चे हैं; वह तुम्हें दृढ़ता से स्थिर
४ करेंगेः और उस दुष्ट से सुरक्षित रखेंगे । हमें प्रभु में तुम्हारे ऊपर भरोसा है, कि जो जो आज्ञा हम तुम्हें देते हैं, उन्हें तुम
५ मानतें हो, और मानते भी रहोगे । परमेश्वर के प्रेम और मसीह के धीरज की ओर प्रभु तुम्हारे मन की अगुवाई करें ।
६ हे भाइयो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से शिक्षा देते हैं; कि हर एक ऐसे भाई से अलग रहे, जो अनुचित चाल
७ चलन और जो शिक्षा उस ने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता । **तुम** आप जानते हो, कि किस रीति से हमारी सी
८ चाल चलनी चाहिए; क्योंकि हम तुम्हारे बीच में अनुचित चाल न चले, **और** किसी की रोटी मुफ़्त में न खाई; पर परिश्रम
९ और कष्ट से रात दिन काम धन्धा करते थे, कि तुम में से किसी पर भार न हो । **यह** नहीं, कि अपने आप को तुम्हारे लिये
१० आदर्श ठहराएं कि तुम हमारी सी चाल चलो । **जब** हम तुम्हारे यहां थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे, कि यदि कोई काम
११ करना न चाहे, तो खाने भी न पाए । **हम** सुनते हैं, कि कितने लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं; और कुछ काम
१२ नहीं करते, पर औरों के काम में हाथ डाला करते हैं । ऐसों को हम प्रभु यीशु में आज्ञा देते और समझाते हैं, कि चुपचाप
१३,१४ काम करके अपनी ही रोटी खाया करें । **और** तुम, हे भाइयो, भलाई करने में साहस न छोड़ो । **यदि** कोई हमारे इस पत्र

इफि ४:१ और कुल१ ३:१ से तुलना करें ।

"स्थिर रहो" - १ कुरि १५:५८; इफि ६:११,१३,१४ ।

२:१६ पिता और यीशु के बीच की मित्रता के बारे में पौलुस की शिक्षा पर ध्यान दें । मत्ती ३:१६,१७; २८:१९; यूहन्ना १७:१; २ यूहन्ना ३ ।

"प्रेम किया" - पद १३, यिर्म ३१:३ ।

"आशा" - १ पत १:३; रोमि ५:२; ८:२४,२५ ।

२:१७ ***"शान्ति"*** या ***"प्रोत्साहन"*** - २ कुरि १:३,४ । लोग एक दूसरे को शान्ति दे सकते हैं ।किन्तु सही प्रकार का प्रोत्साहन स्वयं परमेश्वर से मिलता है ।

अध्याय ३

३:१ ***"हमारे लिए प्रार्थना किया करो"*** रोमि १५:३०-३२; इफि ६:१९,२०; कुलु ४:३,४ ।

"वचन ऐसा शीघ्र फैले और महिमा पाए" - पौलुस ने कभी भी किसी कलीसिया से यह प्रार्थना करने के लिए नहीं कहा, कि परमेश्वर के कार्य के लिए उसे भौतिक वस्तुएँ और धन मिले । उसका मन और ध्यान दूसरी बातों पर लगा हुआ था । यदि हम उनकी सेवा सचमुच में करना चाहते हैं, तो हमें भी पौलुस के समान होना चाहिए ।

३:२ इस समय पौलुस कुरिन्थ में था और दुष्ट लोग उसका विरोध कर रहे थे - प्रेरित १८:१२,१३ ।

३:३ ***"सच्चा"*** - १ कुरि १:९; १०:१३; १ थिस्सु ५:२४; २ तिमो २:१३; इब्रा ३:६; १ पत ४:१९; १ यूहन्ना १:९; प्रका १९:११)

'दुष्ट से" - मत्ती ६:१३; यूहन्ना १७:११,१५

३:४ ***"प्रभु में भरोसा"*** - २ कुरि २:३; ७:४; गल ५:१०; इब्रा६:९ ।

"जो जो आज्ञा हम तुम्हें देते हैं" - मसीह के राजदूत के रूप (२ कुरू ५:२०), जिसे परमेश्वर ने सत्य का विशेष प्रकाशन दिया था (गल १:११,१२) इफि ३:२,३) । पौलुस मसीह के नाम में पूरे अधिकार के साथ बात कर सका (पद ६)। उसने जो कुछ कलीसियाओं को लिखा वह सब मसीह की ओर से आज्ञाएँ थीं ।

३:५ ***"प्रेम"*** - इफि ३:१७-१९; रोमि ५:५ ।

"मसीह के धीरज" - जब मसीह इस पृथ्वी पर थे, वह मनुष्य और शैतान के सारे विरोध के बावजूद धीरज से परमेश्वर की इच्छा पूरी करती रहा । हमारे हृदयों में भी वह यह स्वयं करता है । इब्रा १२:१-३ से तुलना करें ।

३:६ ***"प्रभु यीशु के नाम में"*** - प्रभु के अधिकार से (पद ४) । विश्वासियों को यह आज्ञा मसीह की आज्ञा के रूप में लेनी चाहिए ।

"अलग रहो" - इसका अर्थ पूरी तरह से सम्बन्ध तोड़ना नहीं है । इसका अर्थ है निकट संगति से किनारा करना । इसका अर्थ इससे अधिक भी हो सकता है । यदि कोई भाई या बहन पौलुस की शिक्षाओं के आधार पर जीवन नहीं बिताते तो हमें भी उन्हीं के समान व्यवहार नहीं करना चाहिए । इसके विपरीत हमें यह स्पष्ट करना चाहिए कि न ही परमेश्वर, न हम उससे प्रसन्न होते हैं । पद १४,१५ से तुलना करें ।

३:७,८ ***"हमारी सी चाल चलनी चाहिए"*** - प्रेरित १८:३; २०:३४,३५ ।

३:९ ***"अधिकार"*** - १ कुरू ९:१२-१५ ।

"आदर्श" - केवल परिश्रम ही में नहीं; किन्तु मसीही जीवन कैसे जिया जाये, इन सब में पौलुस हम सभी के लिए एक नमूना है (१ कुरि ११:१; फिलि ३:१७)

३:१० ***"यदि कोई काम न करना चाहे"*** - वह उन लोगों की ओर इशारा नही कर रहा है, जो कार्य करना चाहते हैं लेकिन उन्हें कार्य मिलता नहीं, किन्तु वे जो अवसर मिलने के बावजूद कार्य नहीं करना चाहते ।

३:११ ***"औरों के काम मे हाथ डालते हैं"*** - १ तिमो ५:१३। आलस्य की वजह से प्रायः लोग दूसरों के कार्यों में हाथ डालते हैं । इसलिए पाप पर पाप बढ़ता जाता है, जिसके परिणामस्वरूप पूरी कलीसिया को समस्या सहनी पड़ती है ।

१५ की बात को न माने, तो उस पर दृष्टि रखो; और उस की संगति न करो, जिस से वह लज्जित हो; **तौभी** उसे बैरी मत
१६ समझो पर भाई जानकर चिताओ । **अब** प्रभु जो शान्ति के झरने हैं आप ही तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दें: प्रभु
१७ तुम सब के साथ रहें । मैं पौलुस अपने हाथ से नमस्कार लिखाता हूं: हर पत्री में मेरा यही चिन्ह है : मैं इसी प्रकार से लिखता
१८ हूं । हमारे प्रभु यीशु मसीह की असीम दया तुम सब पर होती रहे ।

३:१३ गल ६:६; १ कुरि १५:५८

३:१४,१५ पद ६ में नोट्स देखें । अनाज्ञाकारी मसीहियों को अनुशासित करने के लिए पौलुस जो डालता है पद ६ के नोट्स देखें । अनुशासन के कारण वे अपने चालचलन के बारे में शर्मिन्दगी महसूस कर जैसे परमेश्वर चाहते हैं, वैसा जीना आरम्भ करते हैं ।

३:१६ ***"शान्ति का झरना"*** - रोमि १५:३३; १६:२०; २ कुरि १३:११; फिलि ४:६, १ थिस्सु ५:२३; इब्रा १३:२० से तुलना करें । ***"शान्ति"*** मसीह जिस का मार्ग शान्ति दिखाता है, उसे पौलुस फिलि ४:६,७ में दिखाता है ।

३:१७ ''पौलुस ने कुछ (शायद सभी) पत्रों को दूसरों से लिखवाया । रो. १६:२२ से तुलना करें । उसके नाम का उपयोग करके झूठे शिक्षक कहीं कलीसियाओं का न लिखें, इसके प्रति वह सतर्क था २:२ । अपने सभी लिखे पत्रों में वह अन्त में अपने हाथों से कुछ लिखा करता था- १ कुरि १६:२१; गल ६:११; कुलु ४:१८ देखें ।

३:१८ रोमि १:७; १६:२०